प्रमोद

धम्म

आगड़ बागड़ बम्म
कुएँ से पानी
खींच रहे थे हम
छूटी जो हाथ से रस्सी
तो हुई – घरररर्रर्र...घम्म।

मनामनी में तनातनी

नानीजी की नाक बड़ी थी
नानाजी का कान बड़ा
नानीजी रबड़ी खाती थी
नाना खाते दही बड़ा

नानी जी की आँख बड़ी थी
नाना जी का दाँत बड़ा
नानी नैनीताल चली तो
नाना चल दिए अलमोड़ा

नाना नानी करते रहते
एक दूजे की मनामनी
मनामनी में होती रहती
उनमें अकसर तनातनी

पानी उतरा टीन पर

पानी उतरा टीन पर
फिर कूदा ज़मीन पर
पत्ती और फूल पर
खूब झूल-झूल कर

कोहरे में हवाओं में
नाचकर झूम कर
छुप गया खो गया
मिट्टी को चूम कर

ज़हीर कुरैशी

चूहे का चश्मा

चूहे ने चश्मा पहना तो
कुछ का कुछ सूझा
चश्मे की आँखों ने
बिल्ली को मच्छर बूझा

बिल्ली बोली – पिद्दी चूहे
चश्मा ज़रा उतार
मरने से पहले कर ले
बिल्ली से आँखें चार